arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 158

रिलीज करने में कठिनाई हो रही है। शिक्षा और वित्त मंत्री ही जब कहें कि यह विश्वविद्यालय सरकार का स्वीकृत धन पाने के योग्य नहीं है तो बेचारा मुख्यमंत्री क्या करें? उसे तो अपने साथियों की रपट और नियमों के अनुसार ही चलना पड़ता है ना।

अब साफ था कि मध्यप्रदेश सरकार नहीं चाहती कि यह विश्वविद्यालय जैसा चल रहा था, वैसा ही चले। अगर वैसा ही चलेगा तो सरकार धन न दे कर इसे सूखा देगी। खूसफुसाहट और अभियान तो राष्ट्रपति शासन में भी शुरू हो गया था कि यह क्या विश्वविद्यालय है, संघ का अड्डा है। फिर कांग्रेस की सरकार बनी तो कहा जाने लगा कि भाजपा सरकार ने संघ को संस्था चलाने और अपने लोगों को जमाने के लिए जो व्यवस्था की है, वह बंद होनी चाहिए। चित्रकूट के पास सतना है जो भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन सिंह का चुनाव क्षेत्र है। उनके कार्यकर्ता शुरू से ही इस विश्वविद्यालय के खिलाफ बोलते थे। खुद अर्जुन सिंह को शिकायत थी कि यह उनके बावजूद खड़ा हो गया और इसे मेरे सहयोग के बिना चलने कैसे दिया जा रहा है। लोकल, प्रांतीय और केंद्रीय कांग्रेसियों ने निष्कर्ष निकाल रखा था कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अड्डा है और इसे नष्ट करना चाहिए।

नानाजी देशमुख ने स्वावलंबन की शिक्षा देने के लिए चित्रकूट जैसे ग्रामीण इलाके में जो प्रयोग किया, वह राजनीतिबाज कांग्रेसियों के लिए भाजपा सरकार का बनाया गया संघी अड्डा ही था और वे उसे या तो नष्ट कर देने पर आमादा थे या अपने हाथों में ले लेने पर। उन्हें इस बात की कोई फिक्र या अहसास नहीं था कि अठारह साल पहले जिस आदमी ने केंद्रीय मंत्री पद स्वीकार नहीं किया और राजनीति छोड़ कर रचनात्मक कार्य में लग गया और जिसका संबंध किसी भी राजनैतिक पार्टी से नहीं है, वह चित्रकूट में आकर संघ का अड्डा क्यों बनाएगा? और इस देश में लोग अलग-अलग क्षेत्रों में प्रयोग नहीं करते, वे नकल करके कंगले हो जाते हैं और लोकतंत्र में सरकारें बदलती रहती हैं। सरकारों के साथ अगर गैर राजनैतिक संस्थाएं भी बदली जाने लगीं तो बचेगा क्या? लेकिन यह रवैया सिर्फ कांग्रेसियों का नहीं है। भाजपा और माकपा वाले ही नहीं क्षेत्रीय पार्टियों वाले एक राज्यीय लोग भी यही करते हैं। मध्य प्रदेश में ही भाजपा ने कांग्रेसी सरकार या अर्जुन सिंह के बनवाए कलाओं के घर 'भारत-भवन' को कहां चलने दिया। 'भारत-भवन' को भी आखिर पटरी से उतार कर और श्रीविहीन करके रास्ते लगा दिया गया है। भारत भवन की फजीहत करने में पटवा सरकार ने कोई सांस्थानिक समझ नहीं दिखाई। जरूरी नहीं कि आप भारत-भवन कलादृष्टि से सहमत हों लेकिन ऐसी संस्थाएं तो स्वायत्त चलने देनी चाहिए जो राष्ट्रीय जीवन के सर्जनात्मक क्षेत्रों में योगदान कर रही हों। लोकतंत्र में पार्टी राजनीति के संकीर्ण रवैये और तात्कालिक हितों से ही संस्थाएं बनती और उजड़ती रहीं तो मूल्यों और वृत्तियों को स्थापित करने के लिए बचेगा क्या?

हमारी कोई राजनैतिक पार्टी इसे नहीं समझती और जब भी, जो भी सत्ता में आती है, अपनीवाली चलाती है। इसलिए देश की ज्यादातर सार्वजनिक संस्थाएं राजनेताओं के इशारों पर चलने के लिए मजबूर हैं। विश्वविद्यालय तो ओछी और दुच्ची राजनीति के केंद्र हैं, शिक्षा के नहीं। रवि बाबू के शांति निकेतन और मालवीयजी के काशी विद्यापीठ तक के जो हाल हुए हैं, वे तमाम शिक्षा संस्थाओं के राजनीतिकरण के उदाहरण हो गए हैं।

नानाजी को समझ तो बहुत पहले आ रहा था कि कांग्रेसियों को उनका ग्रामोदय विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बने रहना कतई रास नहीं आ रहा और जब तक वे इस पद पर रहेंगे विश्वविद्यालय को तड़पा-तड़पा कर मारने की कोशिशें होती रहेंगी। चूंकि विश्वविद्यालय उनका बनाया हुआ है, इसलिए उसका चलते रहना उनके लिए ज्यादा महत्वपूर्ण था, इसलिए नानाजी ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री दोनों को बता कर इस्तीफा दे दिया। अब ग्रामोदय विश्वविद्यालय स्वावलंबन की शिक्षा देने का अभिनव प्रयोग नहीं ग्रेजुएट उत्पादक कारखाना हो गया है। वहां परंपराएं पनप सकें, इसका भी मौका नहीं मिला है, इसलिए ग्रामोदय विश्वविद्यालय का अब क्या होगा, भगवान ही जानता है।

इसके बावजूद नानाजी ने विश्वविद्यालय के पास ही जेआरडी टाटा आयुर्वेद एवं योग विज्ञान शोध प्रतिष्ठान यानी आरोग्यधाम का काम शुरू कर दिया है। मंदाकिनी के तट पर तिरतालीस एकड़ जमीन ली है। मिट्टी को पहाड़ियों पर क्यारियां काट कर जड़ी-बूटी उगाने के खेत बनाए हैं और इस मकर संक्रांति के दिन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री अब्दुल रहमान अंतुले से प्रतिष्ठान का शिलान्यास कराया है। अध्यक्षता करने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा को बुलाया। दोनों कांग्रेस के हैं। प्रतिष्ठान जेआरडी टाटा के नाम पर इसलिए कि इस भारतरत्न ने नानाजी से लोगों के स्वास्थ्य के बारे में काफी बातें की थीं। टाटा हाउस मदद भी कर रहा है। इस शिलान्यास में भी अपन थे और टी.एस. एलियट की लाइनें याद कर रहे थे- 'ओल्ड मेन आट द बी एक्स्प्लोरर्स, हियर एंड देअर डन नोट मेटर।' नानाजी ने अपने ही एक प्रयोग ग्रामोदय विश्वविद्यालय के शव पर दूसरा और भी महत्वाकांक्षी प्रयोग शुरू कर दिया है, नवासी की अमर में। ऐसे आदमी को कौन हरा सकता है? चलिए उसे चित्रकूट में तिलक करें। माथा देख कर नहीं जीवट को समझ कर। ■

'उन्हें मोक्ष न मिले'

एक धार्मिक नेता ने कहा कि मैं प्रार्थना करता हूं कि वह नानाजी को सुदीर्घ आयु तो दे परन्तु उन्हें मोक्ष न दे। उन्हें पुनः इसी धरा पर जन्म दे, जिससे भारत को विश्वगुरु बनाने का सपना पूरा कर सकें।

लेखक परिचय

हेमंत पांडेय *अपनी किशोर अवस्था से ही नानाजी के 24x7 सहयोगी रहे हैं। नानाजी के जागने के साथ और उनके सोने के समय तक, हर पल, हर कदम। नानाजी को समय पर दवाई देनी हो, उनके लिए अखबार बांचना हो, श्रुतिलेखन करना हो या किसी के साथ हुई गोपनीय बात को पचा जाना हो।*

सन 1979 में मैं नेपाल से वाराणसी आया। इसके बाद मैं आदरणीय यादव राव देशमुख जिन्हें लोग काकाजी कहते हैं, के साथ वाराणसी से लखनऊ आया। काकाजी नानाजी के कार्यों को सफल बनाने में शुरू से ही अपना योगदान दे रहे थे। सर्वप्रथम नानाजी ने अपने कार्य क्षेत्र के लिए गोण्डा जिले को चयनित किया था। उस समय गोण्डा जाने के लिए लखनऊ होकर जाना पड़ता था। इसलिए नानाजी का लखनऊ आना-जाना प्रायः होता रहता था।

सन 1984 में नानाजी धारा चिकित्सा के लिए कोयम्बदूर में आर्य वैद्य फार्मेसी गये हुए थे। मैं भी काकाजी के साथ कोयम्बदूर में ही था। वहां 15 दिन तक मुझे नानजी के साथ रहने का अवसर मिला। उसी समय मैंने पहली बार नानाजी की सेवा का सुख प्राप्त किया। उन्हीं 15 दिनों के सहवास के कारण मैं नानाजी के मस्तिष्क में अपने लिए स्थान बना पाया। धारा चिकित्सा पूर्ण करके नानाजी दिल्ली आ गए। कुछ दिनों के पश्चात ही मैं भी नानाजी के पास आ गया। मेरी पढ़ाई अभी पूरी नहीं हुई थी लेकिन मैंने नानाजी के सेवा कार्यों में अपना सहयोग देना आरंभ कर दिया। मैंने स्नातक की पढ़ाई नानाजी के साथ रहकर ही पूरी की। सन 1989 से लेकर आज तक मुझे नानाजी के साथ हर क्षण रहने तथा समाज के हर वर्ग के लोगों को देखने-सुनने का अवसर मिला है। वो मुझे अपने बेटे की तरह प्रेम करते थे। कभी-कभार मैं कुछ आवश्यक कागजात प्रवास में साथ रखना भूल जाता था, तब भी नानाजी नाराज नहीं होते थे। बस केवल इतना ही कहते थे, 'ध्यान रखा करो भाई।'

यह देखकर मुझे ही नहीं सभी को आश्चर्य होता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित कार्यकर्ता होने के बावजूद संघ विरोधी नेताओं से उनके स्नेहपूर्ण संबंध रहे। स्वर्गीय प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर हों या उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह, सभी उनके मित्र रहे हैं और उन पर पूरा विश्वास करते थे। समय-समय पर उनके पास परामर्श लेने के लिए भी आते थे।

उद्योग जगत में नानाजी का संबंध व्यापक था। बिड़ला समूह से लेकर नुस्ली वाडिया, केशव महेन्द्रा, दरबारी सेठ एवं रतन टाटा तक सभी लोग नानाजी को पिता तुल्य मानते थे। वैचारिक दृष्टि से विरोधी व्यक्ति को भी वे अपने सहज स्नेह से अपना बना लेते थे। कार्यकर्ताओं के प्रति उनकी आत्मीयता तो देखते ही बनती थी। मुझे स्मरण है कि एक बार गोण्डा के एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री चन्द्रशेखरजी उदर रोग से पीड़ित थे। नानाजी उनके उपचार के लिए ट्रेन से दिल्ली आये। रातभर गाड़ी में उनके सिरहाने बैठकर उनकी सेवा करते रहे। एक बार भी उन्होंने झपकी नहीं ली। सामान्यतः सभी कार्यकर्ताओं के प्रति उनका यही आत्मीय भाव देखने को मिलता था। जिस मंदाकिनी नदी के रामघाट पर 'चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़, तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुवीर' की उक्ति चरितार्थ हुई, वहीं बैठकर नानाजी चिन्तन करते थे। जिस भूमि पर भरत जैसा भाई मिली हुई रामसत्ता को ठोकर मारकर अपने अग्रज वनवासी राम को मनाने के लिए आये, उसी पवित्र भूमि पर नानाजी ने युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना का कार्य बड़ी सफलता से कर दिखाया।

एक धार्मिक नेता ने अपनी पुस्तिका में नानाजी को अपना आशीर्वाद इस प्रकार लिखा है, 'मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह नानाजी को सुदीर्घ आयु तो दे परन्तु शरीर त्याग करने के बाद उन्हें मोक्ष न दे। उन्हें पुनः इसी धरा पर जन्म दे, जिससे वे चित्रकूट को ही नहीं अपितु इस देवभूमि भारत को विश्वगुरु के स्थान पर पहुंचाने का अपना सपना पूरा कर सकें।' ■